

Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life

6
2020

VOL. 177

Founder's Essay

अपनी विनम्रता के महत्व को याद करना

कोई अन्तर नहीं पड़ता कि उनके विहारवासी या गृहस्थ शिष्य उनसे क्या पूछते हैं, शाक्यमुनि बुद्ध सदा उनकी प्रशंसा करते हुए कहते थे, "बहुत अच्छा! बहुत अच्छा! आपने एक उत्कृष्ट प्रश्न पूछा है।" वे उत्तर की कुशलता से व्याख्या करते थे, जब तक वे समझ नहीं लेते। उन्होंने कभी भी उन्हें अविश्वसनीय परिहास के साथ नहीं देखा, मानो कहते हों कि "तुम यह भी नहीं समझते हो?" इस कारण से, शाक्यमुनि से मिलने या उनकी आवाज सुनने से उनके शिष्यों का मन प्रकाश से भर जाता था, जैसेकि बादलों के पीछे से सूर्य की रोशनी निकल आती है।

जिन सदस्यों को धर्म केंद्रों में जिम्मेदारियाँ सौंपी जाती हैं, मैं उनमें से कुछ ऐसे लोगों को देखता हूँ जो इसके कारण उन्नति की ओर बढ़ रहे हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जिन पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है। क्या फर्क लाता है? मेरा मानना है कि यह इससे

आता है कि क्या वे इस धारणा को समझते हैं कि हर कोई उनसे सीख रहा है, या यदि उन्हें लगता है कि वे हर किसी से सीख रहे हैं। जब दूसरे "हाँ, हाँ!" में जवाब देते हैं, और जो भी आप कहते हैं उसे स्वीकार करते हैं, यह आपके अहंकार को हवा देता है और यह बदले में आपकी बुरी आदतों को प्रकट करता है।

धर्म की भूमिका के लिए नियुक्त होने का अर्थ अभ्यास करने का उपहार मिलना है कि कितनी बार मुझे अपनी बातों को दुहराना पड़ता है, जबतक कि दूसरे समझ नहीं लेते हैं? यह आपके अहंकारी बनने के प्रारंभ का साक्ष्य है। बुद्ध की करुणा को हृदय तक ले जाने के लिए सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करना ही विनम्रता का भाव है।

निक्क्यो निवानो, काइसो जुइकान 9
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी। 186 - 87

Living the Lotus Vol. 177 (June 2020)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Osada
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rissho Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

"लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुसरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

अकर्मण्य मन से मत हारो

श्रद्धेय निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट रिशो कोसेइ काइ



परिश्रम के महत्व को जानना

1960 के दशक के एक जापानी गीत ("सुडारा बुशी," द क्रेज़ी केट्स) में एक अजीब कविता है जो हमारे मन के कार्यक्रम को पूरी तरह से व्यक्त रखती है। यह इस तरह है, "मुझे पता है, लेकिन मैं अभी इसे नहीं कर सकता हूँ।"

हम या तो वह नहीं कर रहे हैं जो हमें करना चाहिए, या उसे करते हैं, जिसका हमने नहीं करने का निश्चय किया है। हम प्रायः अपने व्यवहार का सोचते हैं और स्वयं से कहते हैं, "मुझे पता है, लेकिन मैं इसे नहीं कर सकता हूँ," जैसा कि गीत कहता है, हम नहीं कर सकते हैं?

बौद्ध धर्म हमें शिक्षा देता है कि "सदा अध्यवसायी रहना" महत्वपूर्ण है। कन्फ्यूशि यसवाद और अन्य प्राचीन दर्शन की शिक्षा में निरन्तर अध्ययन करने और पुण्य जीवन जीने के प्रयास करने के महत्व को दर्शाया गया है। इसका कारण यह है कि मानव मन के संवर्धन का कोई अंतिम बिंदु नहीं है, जहाँ हम कह सकते हैं कि "यह काफी अच्छा है।"

सामान्यतया, बुद्ध मार्ग को "अद्वितीय मार्ग" कहा जाता है, जिसका अर्थ है "सबसे उत्तम मार्ग कोई और नहीं है।" हालाँकि, मुझे लगता है कि इसे इस अर्थ में लेना चाहिए, "यदि आपको लगता है कि आप इसे जानते हैं, लेकिन यह अंतिम ज्ञान नहीं है। ज्ञान के लिए अपनी आँखों को खुला रखने के अवसरों की संख्या का कोई अंत नहीं है।" यह हमें आगे की प्रगति के लिए प्रेरित करता है।

सदा अध्यवसायी होना महत्वपूर्ण है, लेकिन हमें अपने विचारों से पराजित हो जाने का भय रहता है, जैसे कि "चीजों को बस थोड़ा सा खिसकाना चोट नहीं पहुँचा सकता है।"

पुण्डरीक सूत्र का परिवर्त-14: सुखविहार, में ये पंक्तियाँ आती हैं:

"वे स्वयं को अकर्मण्यता से दूर रखेंगे,
और सभी निष्क्रिय विचारों से भी,
वे स्वयं को चिंताओं से मुक्त करेंगे,
धर्म का आनन्द लेकर उपदेश करेंगे।"

बुद्ध को ऐसा अहसास हुआ होगा कि अभ्यास हमें कभी-कभी विश्राम की अनुमति देता है और इसलिए उन्होंने इस परिवर्त का उपदेश किया, जो हमें विभिन्न चिंताओं और भ्रमों को दूर रखने की अनुमति देता है, जो उत्पन्न होते हैं और अपने स्वैच्छिक शांतिपूर्ण मन के साथ, पसन्द और खुशी से अभ्यास में अध्यवसायी बने रहें।





कोई आपकी प्रतीक्षा में है

“सदा अध्ययन करते रहना और निपुण होना। इससे ज्यादा खुशी की बात क्या हो सकती है?” ये कन्फ्यूशियस के शब्द हैं। अर्थ यह है कि, उन बच्चों की तरह, जो बार-बार वयस्कों की उन गतिविधियों की नकल करते हैं जिनकी वे प्रशंसा करते हैं, जब हमारे पास उद्देश्य है और उन्हें प्राप्त करने के लिए अपनी पढाई जारी रखते हैं, तो ऐसा नहीं हो सकता है कि अनुभव सुखद नहीं होगा।

यह आस्था की दुनिया पर भी लागू होता है। “मुस्कराहट को मन में रखने की कोशिश करें,” “आभारी होना नहीं भूलना है,” इत्यादि-यदि हम अपने दैनिक लक्ष्यों और अपने आस्था के उद्देश्य को महसूस करते हैं, चाहे ये कुछ भी हों, हमें निरन्तर परिश्रमी रहना है, जिससे कि हम अपने आदर्शों पर चलते हैं। जब यह आदत बन जाती है, तो हमारा आनंद और बढ़ जाता है।

इस बात को ध्यान में रखें कि आपकी आस्था और जिस कारण से आप प्रतिदिन अध्यवसायी रह रहे हैं, उसके पीछे के लक्ष्यों और उद्देश्य को समझना, सहर्ष अध्यवसायी रहने की नींव बन जाती है।

हालाँकि, भले ही हम यह जानते हैं कि हमारे अंतरतम के प्रलोभनों से पराजित हो जाना मानवीय दुर्बलता है। सच कहूँ तो, मुझे लगता है कि विचलित होना स्वाभाविक है या इसे सहजभाव से लेना चाहिए, और कभी-कभार हमारे मन को भागने के लिए जगह का होना चाहिए। ऐसे अवसर पर ऐसा करना उत्तम है, जबतक हम अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य को नहीं भूलते हैं।

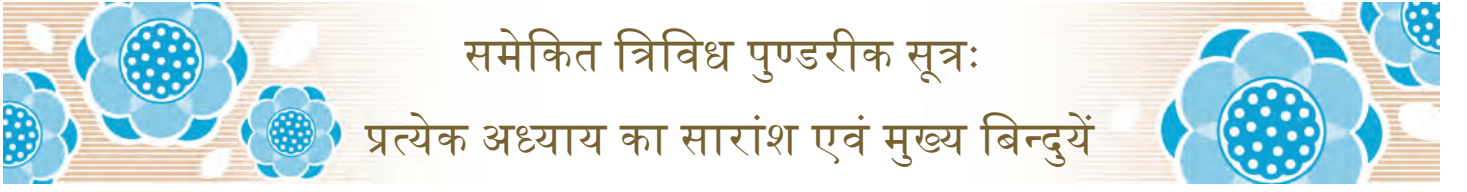
उदाहरण के लिए, मैं नहीं सोचता हूँ कि सूत्र का पाठ के लिए या संध की बैठक का निर्णय लिया गया है, आप अपने को बाध्य करें उनमें भागीदारी निभाने के लिए, भले ही आप अच्छा महसूस नहीं कर रहे हैं या यदि आप थक गए हैं क्योंकि आप बहुत व्यस्त थे। दूसरे शब्दों में, अध्यवसायी बने रहने के लिए, आप अपने को बाध्य करने से बचना चाहिए और जब आवश्यकता हो, तब आराम करें।

“सुखविहार परिवर्त” में भी कहा गया है, “सभी के प्रति करुणा दिखाएँ, और कभी भी अकर्मण्य रहने का विचार न करें।” इन पदों का अर्थ है, जब आप सक्रिय रूप से अन्य लोगों के बारे में सोच रहे हैं, तो आपका दिमाग थका या आलसी नहीं होगा। आप एक माँ की छवि का ध्यान कर सकते हैं, चाहे वह कितनी भी थकी हुई हो, अपने बच्चे के लिए कोई भी कष्ट उठाने को तत्पर रहती है। इसे दूसरी तरह से कहें तो यह ऐसा है जब आपको एहसास हो कि कोई आपकी मदद की प्रतीक्षा कर रहा है और आप आत्मकेंद्रित मन से बहुत दूर निकल आते हैं क्योंकि आपकी उस अकर्मण्य व्यक्ति की मदद करने की इच्छा उभर आती है और आपकी अध्यवसायीता की क्रियायें हर्ष और आनन्द में बदल जाता है।

जापान ही नहीं, पूरा संसार ही विभिन्न कठिनाइयों से पीड़ित है। शास्त्र हमें कहता है कि “धर्म की अनुकंपाकर शिक्षा दो।” क्या आपके पास कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो आपकी प्रतीक्षा कर रहा हो?

From Kosei, June 2020





समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः

प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र

अध्याय 16: तथागत का शाश्वत जीवन (1)



सभी वस्तुओं के परम सत्य के सिद्धांत को अध्याय- 2: उपायकौशल्य के प्रसंग में समझाया गया है, सूत्र में सिद्धांत का इन पंक्तियों में संक्षेपण किया गया है: “आदि से अन्त तक, ऐसा परम अस्तित्वा” ऐसा कहना है कि हम जो कुछ भी देखते हैं या महसूस करते हैं वह उनके (स्थिति, प्रकृति, गठन, क्षमता, कार्य, कारण, प्रभाव या प्रतिफल) में अंतर प्रदर्शित करता है, सब कुछ में धर्म के अनुसार सभी क्रियायें होती हैं, और रूप में सभी समान है। यह एक कठोर दार्शनिक सत्य है, परन्तु इसे समझने मात्र से शीघ्र मुक्ति नहीं मिलती है और ऐसा अनुभव होता है कि जीवन जीने योग्य है।

तदनुसार, शाक्यमुनि ने इस सत्य की एक एक कर उन अवधारणाओं का उपयोग कर व्याख्या की, जिन्हें लोग समझ सकते थे, अर्थात् मानव जाति का परम पदार्थ बुद्ध-प्रकृति है। हालाँकि उन्होंने प्रारंभ से ही इसे स्पष्ट कर दिया था, लेकिन बड़े पैमाने पर समागम के लिए इस सत्य को पकड़ना कठिन था। इसलिए, उन्होंने अपने श्रोताओं को आकर्षित करने के लिए अपने पूर्व जन्म की कहानियों और दृष्टान्तों का सहारा लिया, ताकि सच्चाई को स्वीकार करने के लिए उनके दिमाग को क्रमशः तैयार किया जा सके।

बुद्ध के शाश्वत जीवन की घोषणा

इस परिवर्त में, “तथागत के शाश्वत जीवन काल” का सत्य स्पष्ट रूप से सामने आया है: बुद्ध का जीवन काल अथाह है, अनन्त जीवन वाले बुद्ध को शाश्वत आदि बुद्ध कहा जाता है, और शाक्यमुनि बुद्ध को शाश्वत मूल बुद्ध कहा जाता है। परिवर्त यह भी बताता है कि मानव जाति और अन्य सभी चीजों को अनन्त आदि बुद्ध ने जीवन दिया है और वे उनके बच्चे हैं। इस तरह, सभी चीजों की परम वास्तविकता की निरपेक्ष दार्शनिक धारणा मानवीय गर्मजोशी से भर जाती है और लोग यह महसूस करने पर आभार व्यक्त करने लगते हैं कि, वे अन्तरतह से विश्वास करते हैं कि अनन्त बुद्ध की अनुकंपा ही जीने का कारण है। इस स्तर पर सच्ची खुशी और जीने के मूल्य का भाव आता है।

पुण्डरीक सूत्र के पूर्वाध में सिखाई गई दार्शनिक धारणा को उतरार्ध में एक आध्यात्मिक ऊँचाई दी गई है, क्योंकि यह धार्मिक देशना की उच्चतम आदर्श तक ले जाता है। इस प्रकार यह परिवर्त न

केवल पुण्डरीक सूत्र की भावना का बल्कि बौद्ध धर्म के सभी सूत्रों के सार को समाहित किए है।

सत्य को पहली बार तर्कसंगत ढंग से समझाया गया है, लेकिन अच्छे चिकित्सक के दृष्टांत में इसे ऐसे शब्दों में रखा गया है जो आसानी से सभी के समझ में आ जाता है। इस अर्थ में, दृष्टांत परिवर्त का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

कुशल चिकित्सक का दृष्टान्त

यह दृष्टांत किसी चिकित्सक को औषधियों के साथ उसके ज्ञान और कौशल के लिए प्रसिद्ध बताता है, क्योंकि वह किसी भी बीमारी का इलाज कर सकता है।

इस चिकित्सक के कई बच्चे थे। एक बार जब उसे किसी कार्य में भाग लेने के लिए दूर चला जाना पड़ता है, उसके बच्चे उसकी जहरीली औषधि पी लेते हैं। अगर वह घर पर होता, तो ऐसी घटना





कभी नहीं होती, लेकिन उसकी अनुपस्थिति में बच्चे समय निकालने लिए जो मन में आता करते, और यह त्रासदी हो जाती है।

जैसे जैसे जहर का असर गहराता है, बच्चे तड़पने लगते हैं और जमीन पर लेट जाते हैं। उस समय, चिकित्सक घर लौट आता है। कुछ बच्चे इतने बुरी तरह से प्रभावित नहीं हैं, लेकिन कुछ की हालत नाजुक है और पूरी तरह से अपना होश खो चुके हैं। फिर भी, वे अपने पिता को घर पर देखकर बहुत खुश हुए।

वे घर में आते ही स्वागत करते हैं और बताते हैं कि अपनी मूर्खता में, गलती से जहरीली औषधि पी लिया है। वे उनसे इलाज करने और अपनी जान बचाने की याचना करते हैं।

चिकित्सक ने देखा कि उसके बच्चे किस तरह पीड़ित हैं और मनभावन रंगों, स्वाद, और महक की गुणकारी जड़ी-बूटियों को जमा करने का प्रयास करता है और एक औषधि बनाया। वह बच्चों को यह दवा देता है, उन्हें बताता है कि “यह एक उत्कृष्ट दवा है। इस ले लेना चाहिए। तुम्हारे दुखों से शीघ्र ही आराम दिलायेगा और सुनिश्चित करेगा कि इसके बाद फिर कभी बीमार न हो।”

जो बच्चे उतनी बुरी तरह से प्रभावित नहीं थे और अपना होश नहीं खोया था, उन्होंने दवा लिया और तुरंत ठीक हो गए। लेकिन जिन बच्चों में जहर का गहरा असर था और औषधि की याचना की थी, उन्होंने औषधि नहीं लिया, कारण औषधि उनके मन पसंद रंग और गंध का नहीं था।

चिकित्सक अपने मन में सोचता है, इन बच्चों पर दया आती है। जहर ने उनकी सोच को पूरी तरह से विकृत कर दिया है। मुझे उन्हें इस दवा को लेने के लिए कुछ युक्ति का सहारा लेना चाहिए।

वह फिर बच्चों को एक साथ इकट्ठा करता है और उन्हें बताता है कि उसकी आयु अधिक हो गयी है और वह शीघ्र ही मर जाएगा। फिर भी, उसके पास कुछ मामले हैं और उसे फिर से बाहर चला जाना पड़ेगा। वह उनके लिए तैयार की गई औषधि को छोड़ दे रहा है।

इसके साथ ही वह घर से बाहर निकल गया। वह घर से बाहर निकल जाने के शीघ्र बाद, उसने एक नौकर को यह संवाद देने भेजा है कि वह मर गया।

बच्चे इस संवाद को पाकर स्तब्ध और दुःखी हुए। वे पहली बार अपने अनाथ हो जाने की तीव्र पीड़ा का अनुभव किया और इस

घटके से उनकी इंद्रियाँ ठीक से काम करने लगी। पिता ने जो औषधि छोड़ी थी, वह अब देखने और सूंघने में सुखद लगी। उन्होंने उसे पी लिया और भले चंगे हो गए। उस समय, जीवित स्वस्थ पिता भी घर में वापस आ जाता है।

सभी प्रकार की इच्छाओं का मूल कारण

इस दृष्टांत में चिकित्सक बुद्ध हैं, और बच्चे स्वयं का प्रतिनिधित्व करते हैं। जहरीली औषधि विभिन्न सांसारिक इच्छाओं का प्रतीक है और अच्छी औषधि बुद्ध की धर्मदेशना है।

साधारण लोग सभी प्रकार की इच्छाओं के अधीन होते हैं-वे सोचते हैं कि केवल वही जो वे अपनी आँखों से देख सकते हैं वास्तव में अस्तित्व में हैं और वे उसके प्रति आसक्त रहते हैं, जिससे उनके मन में तृष्णा विकसित होती है। असल में, हम सभी का मन दबाव एवं पीड़ा में रहता है, जब हम अपने शरीर, धन, और अन्य भौतिक चीजों को तथा साथ-साथ आस-पास घटने वाली घटनाओं को देखते हैं, केवल इन चीजों का वास्तव में अस्तित्व है।

प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत

शाक्यमुनि की शिक्षा है कि विश्व की सभी दृष्ट या मूर्त पदार्थों का अस्तित्व अस्थायी है जो कारणों और परिस्थितियों के संयोग से संघात रूप में उत्पन्न हुए हैं। यदि कारणों और परिस्थितियों का संयोग नहीं होता है, तो इन दृश्यमान रूपों का अस्तित्व में आना नहीं होता और विभिन्न कारण और परिस्थितियाँ अन्य दृष्ट रूपों को तदनुसार उत्पन्न नहीं करेंगे। इस सत्य के आधार पर उन्होंने द्वादशांग प्रतीत्यसमुत्पाद, चार आर्य सत्य, अष्टांगिकमार्ग, छः पारमिताओं को विकसित किया। इन शिक्षाओं ने असंख्य लोगों को भ्रम दूर करने और मन की शांति प्राप्त करने में सक्षम बनाया है। आगे जारी रहेगा।

यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो: काकु होन नो आरामासी तो योतेन (समेकित त्रिविध पुण्डरीकसूत्रः प्रत्येक परिवर्त का सारांश और मुख्य बिंदुएँ) में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम प्रकाशित है, (कोसेइ प्रकाशन, 1991 (संशोधित संस्करण, 2016), पीपी.156-63.

अपने विश्वास के उद्देश्य को साकार करना

मुझे आशा है कि सभी लोग सकुशल होंगे। कुछ महीने पूर्व, शायद ही हम में से किसी ने अनुमान लगाया था कि नया कोरोना वायरस वैश्विक स्तर पर इतने व्यापक फैल जाएगा।

गत महीने, प्रेसिडेंट निवानो ने हमें अपने संदेश में कहा है कि हम अपने जीवन को शांति में और शान्तभाव से जी सकते हैं, यदि हमें बुद्ध की शिक्षा में पूर्ण विश्वास है और हम अपने अभ्यास में सदा लगनशील हैं। चूँकि कोरोना वायरस महामारी के विरुद्ध अन्तहीन संघर्ष जारी है, हममें से कुछ लोग इससे थक सकते हैं और आश्चर्य चकित हो सकते हैं कि हर कोई इससे बचने का प्रयास करता है।

इस महीने के अपने संदेश में, प्रेसिडेंट निवानो ने अपने विश्वास के उद्देश्य को महसूस करने और हमेशा अन्य लोगों के बारे में सोचने के महत्व को बताया है, जिससे कि हम आलसी मन से हार न सकें।

जब संस्थापक निक्क्यो निवानो ने रिश्शो कोसेइ काइ की स्थापना की थी, उन्होंने "लोगों को पीडा से मुक्त कराने और लोक को एक शांतिपूर्ण स्थान बनाने" की कामना की थी। इस महीने, संस्थापक की इच्छा को अपने विश्वास का लक्ष्य बनाकर, मुझे उम्मीद है कि हम प्रत्येक दिन को संयोगे रहेंगे और अपना परिश्रम जारी रखेंगे।

रेव. कोइची साइतो

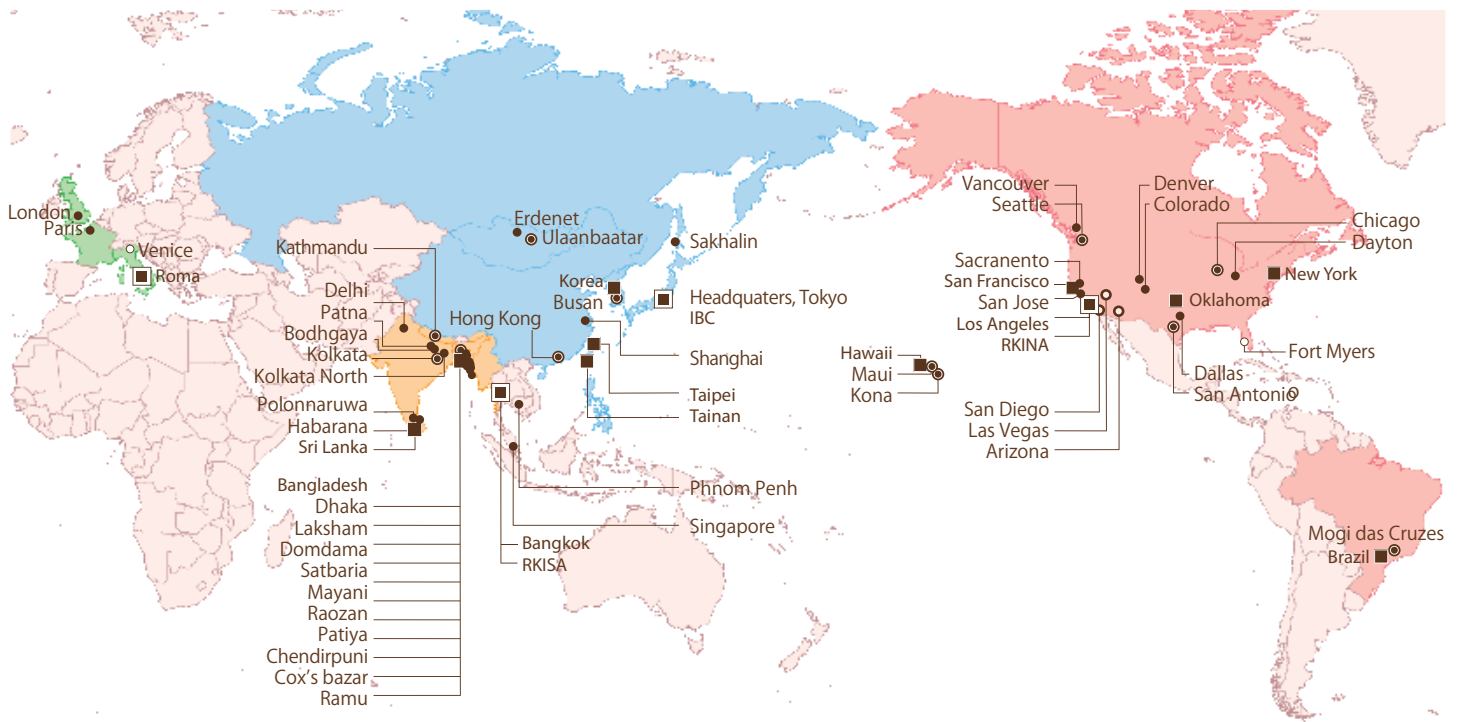
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इंटरनेशनल



✉ We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp



Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement



Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA
TEL: 1-808-455-3212 FAX: 1-808-455-4633
Email: sangha@rkhawaii.org URL: <http://www.rkhawaii.org>

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA
TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA
TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA
POBox 33636, CA 90033, USA
TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567
Email: rk-la@sbcglobal.net URL: <http://www.rkina.org/losangeles.html>

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas**

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA
POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA
TEL: 1-650-359-6951 Email: info@rksf.org
URL: <http://www.rksf.org>

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco

- Rissho Kosei-kai of Sacramento**
- Rissho Kosei-kai of San Jose**

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA
TEL: 1-212-867-5677 Email: rkny39@gmail.com URL: <http://rk-ny.org>

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA
TEL: 1-773-842-5654
Email: murakami4838@aol.com URL: <http://rkchi.org>

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

URL: <http://www.rkftmyersbuddhism.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA
POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA
TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303
Email: rkokdc@gmail.com URL: <http://www.rkok-dharmacenter.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver

1255 Galapago St. #809 Denver, CO 80204, USA
TEL: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA
URL: <http://www.rkina-dayton.com>

The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA
TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-262-4437
Email: info@rkina.org URL: <http://www.rkina.org>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA
(Mail) POBox 692042, San Antonio, TX 78269, USA
TEL: 1-210-561-7991 FAX: 1-210-696-7745
Email: dharmasanantonio@gmail.com
URL: <http://www.rkina.org/sanantonio.html>

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA
TEL: 1-253-945-0024 FAX: 1-253-945-0261
Email: rkseattlewashington@gmail.com
URL: <http://buddhistlearningcenter.org>

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Please contact RKINA

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil
TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377
Email: risho@rkk.org.br URL: <http://www.rkk.org.br>

Facebook: <https://www.facebook.com/rishokosseikaidobrasil>
Instagram: <https://www.instagram.com/rkkbrasil>

Risho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP, CEP 08730-000, Brasil

在家佛教韓國立正佼成會

〒 04420 大韓民國 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
TEL: 82-2-796-5571 FAX: 82-2-796-1696

在家佛教韓國立正佼成會釜山支部

〒 48460 大韓民國釜山廣域市南區水營路 174, 3F
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
TEL: 82-51-643-5571 FAX: 82-51-643-5572

社團法人在家佛教立正佼成會

台灣台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大廈 4 樓
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongheng District, Taipei City 100, Taiwan
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633 FAX: 886-2-2331-3433

台南市在家佛教立正佼成會

台灣台南市崇明 23 街 45 號
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
TEL: 886-6-289-1478 FAX: 886-6-289-1488
Email: koseikaitainan@gmail.com

Risho Kosei-kai South Asia Division

Thai Risho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218

Risho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

Risho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Risho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059, West Bengal, India

Risho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center

Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur, Gaya-823001,
Bihar, India

Risho Kosei-kai of Patna Dharma Center

Risho Kosei-kai of Central Delhi

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Risho Kosei-kai of Singapore

Risho Kosei-kai of Phnom Penh

W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,
Phnom Penh, Cambodia

RKISA Risho Kosei-kai International of South Asia

Thai Risho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

Risho Kosei-kai of Bangkok

Thai Risho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218 Email: info.thairisho@gmail.com

Risho Kosei Dhamma Foundation

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
TEL: 94-11-2982406 FAX: 94-11-2982405

Risho Kosei-kai of Polonnaruwa

Risho Kosei-kai Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
TEL/FAX: 880-31-626575

Risho Kosei-kai Mayani

Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Risho Kosei-kai Damdama

Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Risho Kosei-kai Patiya

China Clinic, Patiya Sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Risho Kosei-kai Satbaria

Village: Satbaria Bepari Para, Chandanaih, Chittagong, Bangladesh

Risho Kosei-kai Chendhirpuni,

Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,
Bangladesh

Risho Kosei-kai Dhaka

408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

Risho Kosei-kai Laksham

Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

Risho Kosei-kai Cox's Bazar

Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

Risho Kosei-kai Cox's Bazar, Ramu Shibu

Risho Kosei-kai Raozan

Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Buddiyskiy khram "Lotos"

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia
TEL: 7-4242-77-05-14

Risho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

Risho Kosei-kai Friends in Shanghai

Risho Kosei-kai of Ulaanbaatar

(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoro-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia

(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia
TEL: 976-70006960 Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Risho Kosei-kai of Erdenet

Risho Kosei-kai di Roma

Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia
TEL/FAX: 39-06-48913949 Email: roma@rk-euro.org

Risho Kosei-kai of the UK

Risho Kosei-kai of Paris

Risho Kosei-kai of Venezia

Risho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC)

166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan
TEL: 03-5341-1230 FAX: 03-5341-1224 URL: <http://www.ibt-rk.org>